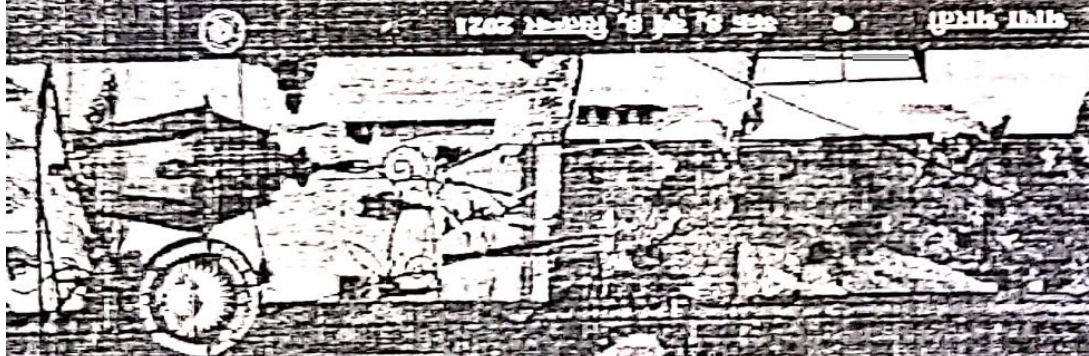


THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS



पुष्पक-पुष्पक

1203 22-2501 18 Dec 78 5000



ଆମ ଆବଦୀ

100

Blueberry

ST. CROIX

सात (सप्तम)

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

ISSN 2321-5704

(वर्ष-9, अंक-8, सितम्बर, 2021)

संरक्षक

कुलपति, प्रो. जे.डी. आही

परामर्शदाता

कुलसचिव, श्री संतोष सोहगौरा

सम्पादक मण्डल

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

श्री संतोष सोहगौरा

डॉ. शशिकुमार सिंह

डॉ. नीरज उपाध्याय

डॉ. पंकज सिंह

डॉ. आफरीन खान

सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

सहायक सम्पादक

अभिषेक सक्सेना



राजभाषा प्रकोष्ठ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश)-470003

दूरभाष : (07582) 297118

ई-मेल : hindicell2015@gmail.com

विष्णु खरे : कृति के साथ आलोचना का युग्म रचती कविता	144
दिनेश अत्रि	
राजनैतिक मुहावरे के कवि धूमिल	150
हिमांशु कुमार	
महात्मा गाँधी के विचारों में समन्वयवाद : पूर्व एवं पश्चिम के	156
विचारों का संगम	
पंकज सिंह	

रिपोर्ट

राजभाषा उन्नयन की रिपोर्ट	166
विनोद रजक	

• • •

राजनैतिक मुहावरे के कवि धूमिल

- हिमांशु कुमार

हिन्दी साहित्य में 'धूमिल' के नाम से प्रसिद्ध कवि का असली नाम सुदामा पाण्डेय और उपनाम 'धूमिल' था। 9 नवम्बर 1936 को वाराणसी के 'खेवली' नामक ग्राम में उनका जन्म हुआ था और 10 फरवरी 1975 को उनकी मृत्यु। समकालीन कविता की जनवादी धारा के कवियों में धूमिल अलग और महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। 1972 में उनका प्रथम काव्य संग्रह आया— 'संसद से सड़क तक', जिसकी कवितायें चर्चा के केन्द्र में रहीं। उनका दूसरा काव्यसंग्रह 'कल सुनना मुझे' 1977 में तथा तीसरा काव्यसंग्रह 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' मरणोपरांत प्रकाशित हुआ। कहना न होगा कि धूमिल समकालीन युगबोध की सच्ची, मार्मिक और तीखी अभिव्यक्ति के कवि हैं। उनका सम्पूर्ण काव्य राजनीतिक और सामाजिक चेतना से सम्पृक्त है। अपने दूसरे संग्रह 'कल सुनना मुझे' की भूमिका 'भाषा की रात' में उन्होंने लिखा है— "युवा लेखक के लिए राजनीतिक समझदारी जरूरी है। बिना इस राजनीतिक समझदारी के आज का लेखन सम्भव नहीं।"।

धूमिल की कविताओं को समझने के लिए उनके आत्मसंघर्ष और उनके परिवेश को समझना जरूरी है। कहते हैं कि कवि का आत्मसंघर्ष उसे बड़ा कवि बनाता है और इस मायने में धूमिल बड़े कवि हैं। उन्होंने हाईस्कूल की मामूली शिक्षा प्राप्त की थी। इसके बाद वे लोहा ढोने वाले मजदूरों के साथ काम करते रहे तो कभी व्यावसायिक फर्म में भी। बाद में वे आई. टी.आई. वाराणसी में नौकरी करने लगे। इस संघर्ष में धूमिल सत्ता के आतंकी और हत्यारे चरित्र से हमेशा भय खाते रहे। और अपनी कविताओं में वे बराबर इसी भय से जूझते हुए संघर्ष करते रहे। बच्चन सिंह लिखते हैं— "धूमिल की कविता हत्यारों के खिलाफ एक लड़ाई है।"।²

आज का दौर मानव सभ्यता का कठिनतम दौर है। चौतरफा संकट के बादल मंडरा रहे हैं। हर चीज बाजार से तय हो रही है। हर चीज के क्रेता-विक्रेता हैं। धर्म, मूल्य, संस्कृति, राजनीति और विचार सभी कुछ विक रहा है। पूरा विश्व ग्लोबलाइजेशन की चपेट में है। देश में निजीकरण के नये मॉडल पेश हो रहे हैं। वित्तीय पूँजी की एकछत्र और निर्बाध प्रभुता स्थापित हो रही है। विश्व-बाजार, तकनीकी संचार और अर्थव्यवस्था के नये समीकरण विकसित हो रहे हैं। इन सारी प्रक्रियाओं से पूरे विश्व में सामाजिक विकास का बुनियादी ढाँचा प्रभावित हुआ है। ऐसे में धूमिल के समय को देखना अप्रासंगिक न होगा।